नवउदारवाद भाड़ में जाए!

सिमोन स्प्रिंगर

Simon Springer
भूगोल विभाग, विक्टोरिया विश्वविद्यालय
ईमेल-simonspringer@gmail.com

डॉ. जय कौशल, हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
एवं धीराज बर्मन, भूगोल विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी में अनूदित।

सार: जी हाँ, यह भाड़ में जाए, नवउदारवाद सोख डालता है, हमें ये नहीं चाहिए.

बीजशब्द: फ़क नियोलिबरेलिज्म, इसे मरने दो.

ये नवउदारवाद भाड़ में जाए! जी हाँ, मैं यही कहना चाहता हूँ। अगर मैं अपनी बात यहीं खत्म कर दूँ तो भी कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा. मेरी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है और आप भीसमझ ही गए होंगे कि मैं वास्तव में क्या कहना चाहता हूँ.नवउदारवाद के बारे में चर्चा करने के लिए मेरे पास कुछ भी सकारात्मक कुछ भी नहीं है, सच कहूँ तो मुझे इस बारे में सोचकर ही बुखार आने लगता है. बस, बहुत हो चुका. मैं वास्तव में जो कहना चाहता था, उसके लिए एक समय मुझे इस पत्र का शीर्षक 'नवउदारवाद को भूल जाओ' देना ज्यादा उचित जान पड़ रहा था. मैं कई वर्षों से इस विषय पर लिख रहा हूँ (स्प्रिंगर 2008, 2009, 2011, 2013, 2015; स्प्रिंगर एवं अन्य, 2016) और अब मैं इस बिंदु पर आ खड़ा हुआ हूँ, जहाँ से इस विचार पर और अधिक ऊर्जा नहीं खपाई जा सकती, क्योंकि मुझे डर है कि इससे आगे काम करने का मतलब है इस मुद्दे को बेवजह स्थायीत्व प्रदान करना। बल्कि मुझे लगता है कि एक राजनीतिक पैंतरेबाजकी तरह अगर हम सब शुतुरमुर्ग की तरह रेत में अपने सिर घुसाकर अपनी साझी दुनिया में नवउदारवाद के विनाशकारी और गंभीर परिणामों को नजरअंदाज करने लगेंतो स्थिति और बुरी हो जाएगी। असल में, नवउदारवाद की लगातार बढ़ती शक्ति को नकारना मुश्किल है और मुझे यकीन है कि इसे नकारना रणनीतिक ढंग से भी सही तरीका नहीं होगा (स्प्रिंगर 2016 ए). सो, इस

Published under Creative Commons licence: Attribution-Noncommercial-No Derivative Works

बारे में मेरे सटीक विचार यही हैं कि 'यह, भाड़ में जाए'. मेरे द्वारा इस पेपर के लिए अगर थोड़ा शालीन शीर्षक चुन लिया जाता तो शायद यह इसके अपराध को कमतर ही व्यंजित करता। इसे बाद में देखा जाएगा। कोई गालियाँ दे रहा हो तो हम समाज को लेकर बहुत चिंतित क्यों हो उठते हैं जबकि हमारे सामने चिंतन करने के लिए नवउदारवाद जैसी उससे भी घृणित चीज मौजूद है! मैंने सोच लिया कि अब मुझे नियमोल्लंघन करने हैं, मैं परेशान हो गया था, मुझे नवउदारवाद द्वारा किया जा रहा अपमान और शोषण साफ़-साफ़ दिखाई पड़ रहा था. यह अच्छी बात नहीं है, बस इसीलिए हम सबको इसका उल्लंघन और विरोध करना चाहिए. अगर मैं अपने पेपर का शीर्षक चुनने में थोड़ी नरमी बरतता तो क्या यह इसकी शक्ति को देखते हुए भी इसके प्रति उदारता नहीं मानी जाती!हालांकि मैं भी शुरुआत में जरा-सा चिंतित हुआ था कि कहीं ऐसा शीर्षक मेरी साख तो नहीं गिरा देगा? कहीं इससे मेरी अगली पदोन्नति, नई नौकरी के ऑफ़र, मेरी शैक्षिक गतिविधियाँ अथवा कहीं अन्यत्र जाने या उन्नति करने के अवसर तो बाधित नहीं हो जाएंगे! एकबारगी यह मुझे नवउदारवाद के सामने अपनी निजी हार लगी, बखैर, अब यह भाड़ में जाए!ऐसा महसूस हुआ, इसलिए मैं मानता हूँ कि नवउदारवाद के विमर्श का प्रतिवाद करने के लिए वास्तव में कोई मजबूत वैचारिक उत्तर मौजूद नहीं है. तो क्यों नहीं इसे लोग सीधे-सीधे क्यों नहीं नकार देते! बस, हम लोग अकादमिक जगत में रंग-बिरंगी दिखने वाली, दोगली और अपनी सामाजिक नींव को खुद कमजोर करने वाली उत्परिवर्तन की भौगोलिक सैद्धांतिकियों का उपयोग कर इस पर बात करके शांत हो जाते हैं, जिससे बहुत फ़र्क नहीं पड़ता. अपने लेखन में मेरा योगदान भी ऐसे ही कुछ सिद्धांतों का उपयोग है (स्प्रिंगर 2010). पर मैं वास्तव में उक्त विचार के विरोध में ऐसा कुछ करना चाहता था. क्योंकि अपने दैनिक सोच-विचार में, अपने क्रिया-कलापों में मैंने इस पर एक अरुचिकर तरीके से नकार की राजनीति महसूस की। ब इसीलिए मैंने इसका शीर्षक 'फ़क नियोलिबरेलिज्म' रखा क्योंकि यही वह सही पद है, जो मेरे कहे को पूरी तरह व्यंजित कर सकता है. असल में, मैं एक बारीक बिंदु की ओर इशारा कर रहा हूँ और इसके लिए मैंने 'फ़क' शब्द पर इतना अधिक सोचा है कि जीवन में किसी और शब्द पर कभी ऐसे नहीं सोचा. गज़ब का शब्द है ये! विस्मय व्यक्त करने के लिए अंग्रेजी में सबसे ज्यादा काम में लिए जाने वाले इस शब्द को हम कभी संज्ञा, क्रिया अथवा विशेषण के रूप में प्रयोग करते हैं. इसेक्रोध, अवमानना, झुंझलाहट, उदासीनताऔरआश्चर्य व्यक्त करने के साथ-साथ अक्सर बिना किसी मतलब के भी बोल दिया जाता है, जैसे 'फ़क समथिंग अप', 'फ़क समवन ओवर', 'फ़क अराउंड', नॉट गिव अ फ़क' आदि, यहाँ तक कि कभी-कभी सीधे-सीधे किसी को इंगित करते हुए कह दिया जाता है, 'गो फ़क योअरसेल्फ़' . इस पॉइंट पर आकर आप सोचने लगते हो कि, अच्छा!, किसके साथ फ़क? खैर, अगर आप वास्तव में नवउदारवाद का अंत करने के इच्छुक हैं तो आपको कुछ करना पड़ेगा. इस शब्द में जो ताकतवर शक्तियाँ ध्वनित होती है, वही उसकी चुनौती भी हैं. 'फ़क नियोलिबरेलिज्म'पद की सही व्यंजना और बारीकी तक पँहुचकर ही हम इसको ठीक से समझ सकते हैं और खत्म करने के औजार पा सकते हैं. जी हाँ, तब तक 'फ़क नियोलिबरेलिज्म' और 'फ़क नूआन्स' दोनों झेलें.हाल ही में कीरन हीली(2016: 1) ने तर्क दिया है कि, विकास की यह तथाकथित बाधापूर्ण थ्योरी न केवल बौद्धिक रूप से रोचक और आनुभाविक दृष्टि से उपजाऊ है, वरन् सफ़ल भी'. तो इस बारीकी से सम्मोहित हुए बिना आइए, तुरंत यह जानें और काम में लग जाएँ जैसा कि मैं इस बेहूदा नवउदारवाद पर सोच रहा हूँ. इसका पहला अर्थ तो बिल्कुल स्पष्ट है.'फ़क नियोलिबरेलिज्म' कहकर हम इस नव उदारवादी व्यवस्था के प्रति अपना रोष प्रकट कर रहे हैं. जो हमारे गुस्से, आक्रोश और हम सबके सामने आ खड़ी हुई इस घटिया, दुर्भावनापूर्ण स्थिति के मुँह पर थूकने का संकेत है. नवउदारवाद और इसके दुष्प्रभावों के खिलाफ़ प्रतिरोध दर्ज करवाकर, जुलूस निकालकर और अधिक संख्या में आलेख एवं किताबें लिखकर भी इसे व्यक्त किया जा सकता है. इससे न केवल उपदेश का

रूप बदल जाएगा वरन् पहले से ही विकृत चुकी आकाँक्षाएँ अपने तेवर बदलने को मजबूर हो जाएँगी.मैं यह नहीं कह रहा कि उक्त पद्धतियाँ हमारे प्रतिरोध करने के सटीक तरीके सिद्ध होने वाले हैं बल्कि मुझे यकीन है कि ये सभी उपाय न तो नवउदारवाद को पूरी तरह बाँधने में समर्थ हैं और न ही हमारे पक्ष में हैं. इस मुद्दे पर जनता का विशाल रक्षात्मक प्रतिरोध दर्ज कराने के लिए शक्तिशाली कारकों को आपसी संवाद का हिस्सा बनाना होगा. हमारा यह सोचना गलत होगा कि वे प्रतिरोध की आवाज को सुनने और शामिल करने की पहल करेंगे (ग्रेबर, 2009). क्या हमें बात नहीं करनी चाहिए? अब हम 'फ़क नियोलिबरेलिज्म' के दूसरे पॉइंट पर आते हैं. इसे नवउदारवाद के अस्वीकार पर आधारित है (जैसा कि हमें लगता है) जे.के गिब्सन-ग्राहम (1996) द्वारा विकसित किया गया यह तरीका नवउदारवाद के खात्मे के लिए काफ़ी उपयोगी जान पड़ता है. इसके अंतर्गत हमें सीधे-सीधे नवउदारवाद पर बात करना बंद कर देना होगा. विद्वानों एवं शोधार्थियों को इसे ध्यान में रखते हुए नवउदारवाद पर अपने शोध और अध्ययन को प्राथमिकता देना बंद करना पड़ेगा.हो सकता है हम इसे पूरी तरह न भूल पाएँ अथवा उपेक्षित न कर पाएँ, मैंने स्वयं भी इसे एक समस्या ही माना है, लेकिन हम इसे अन्य बातों की तुलना में कम महत्व तो दे ही सकते हैं, या इस पर लिखना नगण्य कर सकते हैं. एक बार फ़िर यह हमारे लिए संपर्क का एक महत्वपूर्ण बिंदु बन गया है कि हम नवउदारवाद की दुनिया से ऊपर हैं. हालांकि मुझे अच्छी तरह पता है कि इतना भर पर्याप्त नहीं है. जैसा मार्क परसेल (2016: 620) का तर्क है, "हमें न केवल नवउदारवाद की दिशा उलटने की जरूरत है, वरन् अपनी भी. ताकि हम अपने मुश्किल मुद्दों को खुद के लिए हल करने की आनंददायक शुरुआत कर सकें." 'निषेध, विरोध और आलोचना जरूरी हैं, पर हमें सचेत होकर यह भी सोचना चाहिए कि कैसे इस कम्बख्त नवउदारवाद की पहुँच से चीजों को दूर रखा जाए. अब तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण पॉइंट, जिस पर मुझे लगता है कि हमें 'फ़क नियोलिबरेलिज्म' पर विचार करते समय बखूबी फोकस करना चाहिए, और वह है- पूर्व-निर्धारित राजनीति के तहत नवउदारवाद के परे जाकर इस पर सीधी कार्यवाही करना (मेकेलबर्ग, 2011).इसके लिए केंद्रिकता, पदानुक्रम और आधिकारिकता का नकार जरूरी है, इस आधिकारिकता में प्रतिनिधि राजनीति प्रमुख होती है और इसके लिए समानांतर संबंधों तथा संगठन के ऐसे रूपों पर फ़ोकस करना पड़ता है जिनका प्रतिबिंबन इच्छित भावी समाज में दिखाई दे (बॉग्स 1977). इस तरह बिना 'संवाद-स्थापन', पूर्वनिर्धारण और सीधी कार्यवाही के कुछ भी नहीं हो सकेगा. ध्यान रहे, हमें जो भी करना है, खुद से ही करना होगा.फिर भी, उन सभी प्रमुख तरीकों पर ध्यान जरूर दिया गया है, जिसमें नवउदारवाद कब्जा करने में सक्षम रहा और सभी तरह की राजनीतिक बहसों और आदेशों में सही ठहराया जाता रहा (बर्नेट 2015; बिर्च 2005; लुईस 2009, ओंग 2007. डेविड हार्वे (2015) जैसे आलोचकों की मानें तो नवउदारवाद के प्रश्न को राज्य स्वयं प्रमुखता देकर हल कर सकता है. खासकर, उसे गैरश्रेणीबद्ध संगठन और क्षैतिज राजनीति को सबसे पहले खारिज करना चाहिए, जो रेलगाड़ी में ग्रीस की तरह नवउदारवादी भविष्य की जरूरत बन रहे हैं. वस्तुत: अभी अपनी हताशा में वह पूरी तरह पूर्व-निर्धारित राजनीति को गलत-समझ बैठा है, जबकि यह रास्ता है, भविष्य के लिए एक जरूरी रास्ता, मंजिल नहीं (स्प्रिंगर 2012) दूसरे शब्दों में, वहाँ पहले से ही पूर्वनिर्धारित राजनीति को लेकर लगातार ऐसी सतर्कता बनाए रखी गई है, ताकि वास्तविक प्री-फ़िगरेशन की वास्तविक प्रेक्टिस शामिल ही न हो पाए. यह एक प्रभावी और चौकस स्थिति तो है ही, साथ ही इसे उत्पादन, आविष्कार और समुदाय की इच्छा की संतुष्टि के रूप में निर्माण की दिशा में एक अच्छा कदम भी माना जाएगा. इस नजरिए से पूर्वनिर्धारित राजनीति स्पष्ट रूप से नवउदारवाद विरोधी है. वे साधनों, रास्तों को हमारा समझकर उनपर कब्जा कर रहे हैं, पर हमारे रास्ते अंतहीन हैं. इसे प्रकल्पित करने के लिए एकता और सबके साथ बराबरी से चलने की जरूरत है, और इससे जो

प्रफ़ुल्लता एवं आनंद है, वह न तो अगुआ बनकर मिलेगा और न कट्टर सर्वहारा वर्ग साथ झूठे आदर्श-राज्य बल्कि कहना चाहिए 'शून्य-राज्य' के भावभीने वादे करने में है. हाँ, यह यथार्थ की कठोर और पुरानी जमीन पर नई और वास्तविक दुनिया के निर्माण में है, जिसके लिए कड़ी मेहनत और एक बार फ़िर पक्के इरादों की आवश्यकता है (इंसे 2012). नवउदारवाद में ऐसा कुछ नहीं है कि हम इसे महत्व दें, इसीलिए निर्माण की पूर्वनिर्धारित राजनीति के संदर्भ में मेरा सीधे तौर पर यही कहना है- नवउदारवाद हो बरबाद! हमारे राजानीतिक कल्पनालोक में भी इस बदतमीज की घुसपैठ हो गई है. इसकी वजह से हिंसा बढ़ी है. असमानता अब एक सद्गुण बन गया है. इसने पर्यावरण को तबाह कर डाला है. इसने संचय की अंतहीन प्रवृत्ति और विकास के छद्म को बेतरह बढ़ावा दिया है. भाड़ में जाएँ मोंट पेलेरिन सोसाइटी और उसके थिंकटैंक, जो लगातार इसे न केवल सहारा दिए हुए हैं, वरन् बढ़ावा भी दे रहे हैं. फ़्रेडरिक हाएक और मिल्टन फ़्रायडमेन को लानत है, जो वे नव उदारवाद पर टिके हुए अपने विचार हम पर थोप रहे हैं. लानत है उन थैचरों, रीगनों और लोभ में अंधे हो चुके ऐसे सभी कायर, आत्मकेंद्रित राजानीतिज्ञों को! भाड़ में जाएँ वे लोग, जो जानबूझकर जनता को इसका डर दिखाकर अपने व्यापार में लगे हैं, जिनकी नजर में दूसरों की औकात सिर्फ़ उनका संडास साफ़ करने और फर्श पर पोंछा लगाने वाले से ज्यादा नहीं है. ऐसे लोग किसी को भी अपने समाज का सम्माननीय नागरिक नहीं गिनते. मेट्रिक्स की ओर तेजी से मुड़ते और इस बात से बेपरवाह कि वे जिसे बेमायने समझ रहे हैं, उसके भी मायने हो सकते हैं. लानत है, लाभ कमाने की उस इच्छा को जो समाज के हितों की उपेक्षा करती है. सीधे तौर पर कहें तो, हर उस चीज को लानत है, जिसकी बात नवउदारवाद करता है. उस ट्रोजन हॉर्स को भी, जिस पर यह सवार है! बहुत समय से हमको यही समझाया जा रहा है कि 'इस व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं है'। यह उसी प्रकार की स्थिति है, जैसे 'समुद्र में उठता ज्वार सारी नावों को अपनी चपेट में ले लेता है, और हम एक डरावने डार्विनियन संसार में रहते हैं, जहाँ सब एक-दूसरे के विरोधी हैं. सब के सब 'योग्यतम की उत्तरजीविता' के सिद्धांत के ही खिलाफ़ हो गए हैं. यहाँ संघर्ष का सिद्धांत काम करता है. हम पूरी तरह 'कॉमन्स की त्रासदी' के विचार में डूब गए, जबकि असलियत में यह चाल है, जो 'पूंजीवाद की त्रासदी' औरउसके द्वारा युद्धस्तर पर की गई अंतहीन लूट के रूप में सामने आती है. (ले बिलॉन 2012). गैरेट हार्डिन (1968) की दुखती रग यही थी. वह कभी यह सोचना बंद नहीं कर सका कि खुले में चरते दिखाई देते आम पशु किसी की निजी मिल्कियत कैसे बन गए थे. कैसा रहे, अगर हम असली कॉमन्स से उसके बारे में निजी मिल्कियत की इस पूर्वधारणा के बिना मिलें (जपेसन एवं अन्य 2014)? कैसा रहे, अगर हम विकल्पों के पूर्व-प्रारूपों पर गौर करना शुरू कर दें जो कि पहले से संगठन के सबसे महत्वपूर्ण प्रकार सिद्ध हो चुके हैं (व्हाइट और विलियम्स 2012)? कैसा रहे, अगर हम प्रतियोगिता और मेरिट की कड़वी गोलियाँ खाने के बजाय अपनी ऊर्जा नवउदारवादी नुस्खों द्वारा इलाज में खर्च न करें, बल्कि सहयोग और आपसी सहायता की गहरी हीलिंग का उपयोग करें (हेकर्ट 2010)? एक बार जेमी पेक (2004: 403) ने नवउदारवाद को 'एक कट्टरपंथी राजनीतिक नारा' घोषित किया था, पर अब यह आलोचना के क्षेत्र से ही बाहर हो गया है. हमने सालों पहले अपने दुश्मन को पहचान लिया था पर तब हम इसे अपने लेखन और प्रतिरोध के बल पर ही जान सके थे. अब हम इसके खात्मे को लेकर निश्चित हो चुके हैं, 2008 के वित्तीय संकट और कब्जा आंदोलन के परिणाम आने के बाद यह लगातार हाँफ़ रहा है और अपनी खराब हालत को किसी तरह शक्तिशाली ढंग से उबारने के लिए संघर्ष कर रहा है (क्राउच 2011; पेक 2010). जेफ़ी विल्सन (2016) ने इसकी बढ़ती शक्ति को 'नवउदारवादी असभ्य' कहा हैऔर मैं यकीनी तौर पर कह सकता हूँ कि इस हॉरर शो पर काबू पाने के लिए हमें अपनी राजनीति को कानूनी दायरे में लाना होगा (रोलो 2016). अगर यह 'फ़क नवउदारवाद' हमारी राजनीति में घुसकर उसे बदलने का एक नया मंत्र बन गया तो क्या होगा?

एक ऐसे मुहावरे को जीवंत किया जाना चाहिये जो न सिर्फ हमको सक्रियता प्रदान करे वरन् उस स्थान और उन लम्हों को भी सुधारे जिसमें हम अपना जीवन जीते है? क्या हर बार जब हम इस मुहावरे का प्रयोग करते हैं तो हमको ऐसी निष्क्रिय संस्था याद नही आती जो महज शब्दजाल में उलझती और सिद्धांतों के संकलन तथा व्यवस्था के पुरातन स्वरूप को संरक्षित करने के दिलचस्प अभ्यास में लिप्त रहती है? हमको नवउदारवाद को अस्वीकार के लिए बहुविध का प्रयोग करने चाहिये। जबकि हम नव उदारवाद न पूरी तरह से नकार सकते है और न ही भूल सकते हैं अतः हमको इसका इस तरह विरोध करना होगा जिससे बात इसके प्रदर्शन के शाब्दिक प्रतिवाद से आगे बढ़े। किसी भी सूरत में हमको नए और उग्र राजनीतिक नारे को प्रबल करना होगा। (#fuckneoliberalism) इस हैशटैग का प्रयोग करके हम अपनी नाराजगी को वायरल कर सकते है। परन्तु हमको अपने रोष को प्रकट करने से भी अधिक बहुत कुछ करना होगा। हमको अपने-अपने हल और अपनी अभिलाषाओं को अभी और इसी वक्त मजबूती से कहना होगा। हमको दुनिया को यह अहसास कराना होगा कि यह विरोध का दौर रुकने वाला नहीं है। हम स्वेच्छा से इस व्यवस्था पर मोहित हुए और बार-बार वर्तमान राजनीतिक संरचना से प्रतिनिधित्व की मांग करके स्वयं को कमजोर किया। हमने लम्बे समय तक आकाश से एक बूँद पाने की निरर्थक प्रतीक्षा की। इस व्यवस्था ने स्वयं साबित किया है कि यह पूरी तरह से भ्रष्ट है। इस व्यस्वथा के कारण आने वाले समय में हमारे महान उम्मीदवार भी असफल साबित होंगे। इस नवउदारवादी संचरना में परेशानी का कारण यह नहीं है कि समस्याग्रस्त व्यक्ति सत्ता में था वरन् हमारा इस व्यवस्था के प्रति अंधविशवास मूल समस्या है। हमने एक ऐसी संस्थागत समस्याओं को जन्म दिया और बढ़ाया है जिसने " ल्युसिफ़र इफ़ेक्ट" को खुलकर अपना प्रभाव दिखाने का अवसर दिया। (जिम्बार्डो 2007). इस समस्या की कुरूपता यह है कि इसमें काम करने वाले ये राजनीतिज्ञ अपनी नौकरी सिर्फ इसलिए कर रहे हैं क्योंकि व्यवस्था इनको सत्ता के उलटफेर का अवसर देती है क्योंकि ये सब इस तरह से तैयार किये गए हैं ताकि पूंजीवाद का समर्थन कर सकें। (आरेंट1971). परन्तु हम उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं। हम इस व्यवस्था के प्रति आभारी नहीं है।अपनी सीधी कार्यवाही और संगठनात्मक बदलाव के द्वारा हम व्यवस्था के सभी दोषों और शोषण के बृहद् चक्र को तोड़ सकते हैं। जब राजनीतिक व्यवस्था अंदरुनी तौर उलझी हुई तथा उदारवाद के अनुरूप परिभाषित और नियमित हो तो ये कभी भी हमारी समझ को और उसके उसके अनुरूप बनने वाली दुनिया का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती है। अत: अब हमको अपने तय किए गये जीवनपथ की जिम्मेदारी उठानी होगी और एक समग्र संस्था के निर्माण की प्रबल मांग करनी होगी। हमको अपनी राजनीति में सक्रिय होना आरम्भ करना होगा और सम्बन्धों की इस समझ के प्रति अपना समर्थन दर्शाना होगा जो कि यह रेखांकित करती है कि एक की पीड़ा और अपमान वास्तव में सभी का शोषण है। (शन्नोन और रूश 2009, स्प्रिंगर 2014). हम सम्भावनाओं से भरी ऐसी दुनिया में इस आपसी प्रतिबद्धता के साथ रहना आरम्भ कर सकते हैं कि उसमें आपसी सहयोग, फेलोशिप, पारस्परिक आदान-प्रदान तथा अश्रेणीबद्ध संगठन हो। ऐसी व्यवस्था जो कि लोकतंत्र की मूलभावना के अनुरूप लोगों की शक्ति पर आधारित होगी। मूलत: नवउदारवाद एक बेहद बकवास विचार है जोकि अपने साथ बेहूदा परिणाम और मूर्खतापूर्ण मान्यताओं को लेकर आता है। बदले में यह उतनी ही प्रतिरोधात्मक भाषा और आंदोलन का सामना करने योग्य है. हमारा समुदाय, हमारा संगठन और हमारा एक-दूसरे की चिंता करना इसको नागवार गुजरता है. हम जिसका जश्न मनाते हैं ये उससे नफरत करता है. अतः हम कह सकते हैं'फ़क नियोलिबरेलिज्म'. आइए, इसे जोर से कहें, मेरे साथ कहें, जहाँ तक आवाज पहुँचे, सबसे कहें! लेकिन इन सबका एक ही मतलब है कि यह शक्ति के पुरातन स्वरूप में बदलाव का एक पुरजोर आह्वान है ताकि इस विभेदकारी दुनिया को बदला जा सके। ये नवउदारवाद भाड़ में जाए!

आभार:

मैं विषय के टाइटल के लिए जैक टॉनिस का हृदय से आभारी हूँ. 2015 के आरम्भ में उन्होंने मुझे एक प्यारा-सा मेल लिखा जिसमें अपने परिचय के साथ सन्देश में इसको (फ़क) सब्जेक्ट लाइन बनाया था. सुस्पष्ट और सीधा, विषय पर केंद्रित. उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न सिडनी में अपनी संकटपूर्ण स्थिति के बारे में बताया था जिन दिनों वे सेशनल हेल में फ़ँसे हुए थे. वास्तव में अपनी ऐसी-तैसी कराये यह नवउदारवाद. जैक ने बताया कि उसको हाल ही में रोजगार मिला है जो कि पहले कम जोखिम-भरा है पर बुरे लोगों के साथ ने उसे और अधिक घृणा और अवज्ञा से भर दिया है.उन साथियों का धन्यवाद, जिन्होंने मुझे उत्साह से भरे रखा. मैं शुक्रगुजार हूँ कीन बिर्च और टॉबी रॉलट का, जिन्होंने मेरे विचारों को सुना और मेरे साथ हँसे। मार्क परसेल ने अपनी नायाब सोच से मुझे नवउदारवाद के परे जाकर सोचने के लिए प्रेरित किया ("Listen Neoliberalism!" A Personal Response to Simon Springer's "Fuck Neoliberalism"). शुक्रिया लेवी गहमन! जिनकी उत्साही चेतना और सहयोग के कारण मैं यहां इन सम्बंधी विचारों की चर्चा कर सका। फ़रहंग रौहनी और रॉन टेरुले की समीक्षाओं ने मुझे विश्वास दिलाया कि अकादमी में अभी भी प्रतिस्पर्धा बाकी है। अंत में धन्यवाद उन सभी लोगों का जिन्होंने इस लेख के बारे में मुझे लिखा और अपनी सहभागिता प्रदर्शित की। इससे पहले कि मैं इसे इंटरनेट पर अपलोड करता! मैं आभारी और आशान्वित दोनों हूँ कि बहुत सारे लोग इस मनोभावना से सम्बद्ध हैं। हम जीतेंगे जरूर!

संदर्भ-सूची:

अरेंट, एच. (1971). ऐचमन इन जेरुशलम : ए रिपोर्ट ऑन द बनालिटी ऑफ़ एविल, न्यूयॉर्क, वाइकिंग प्रेस

बर्नेट, सी.(2005). द कॉन्सोलेशन्स ऑफ़ 'नियोलिबरेलिज्म'. जियोफ़ॉर्म, 36(1), 7-12.

बिर्च, के, (2015). वी हेव नेवर नियोलिबरल : ए मेनिफ़ेस्टो फ़ॉर अ डूम्ड यूथ. अल्रेसफ़ोर्ड: ज़ीरो बुक्स.

बॉग्स, सी.(1977). मार्क्सिज्म, प्रीफ़िगरेटिव कम्युनिज्म एंड द प्रॉब्लम ऑफ़ वर्कर्स कंट्रोल रेडिकल अमेरिका, 11(6), 99-122.

क्राउच, सी. (2011). द स्ट्रेंज नॉन-डेथ ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म. मलादेन, एम ए: पॉलिटी प्रेस.

गिब्सन-ग्राहम, जे के. (1996). द एंड ऑफ़ केपिटलिज्म (एस वी नो इट) : ए फ़ेमिनिस्ट क्रिटीक ऑफ़ पॉलिटिकल इकोनॉमी. माइनेपॉलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिनेसोटा प्रेस,

ग्रेबर, डी. (2009). डाइरेक्ट एक्शन : एन एंथोलॉजी. ऑकलैंड: ए के प्रेस.

हार्डिन, जी. (1968). द ट्रेजेडी ऑफ़ द कॉमन्स. साइंस, 162(3859), 1243-1248.

हार्वे, डी. (2015). "लिसन, एनार्किस्ट!" ए परनल रेस्पॉंस टू सिमोन स्प्रिंगर्स " व्हाई ए एडिकल ज्योग्राफ़ी मस्ट बी

एनार्किस्ट". DavidHarvey.org.http://davidharvey.org/2015/06/listen-anarchist-by-david-harvey/

हेली, के. (2016) फ़क नुआन्स. सोशियोलॉजिकल थ्योरी.https://kieranhealy.org/files/papers/fucknuance.pdf

हेकर्ट, जे. (2010). लिस्निंग, केयरिंग, बिकमिंग: एनार्किज्म एस एन एथिक्स ऑफ़ डाइरेक्ट रिलेशनशीप्स इन फ़ेंक्स, बी (संपा.) एनार्किज्म एंड फिलॉसोफ़ी. न्यूयॉर्क: पालग्रेव मैकमिलन, पृ.186-207.

इंसे, ए. (2012). इन द शेल ऑफ़ द ओल्ड: एनार्किस्ट ज्योग्राफ़ीज ऑफ़ टेरीटोरियेलाइजेशन. एंटीपोड, 44(5), 1645-1666.

जपेसन, एस., क्रूजिंसकी, ए., सरासिन, आर., एंड ब्रेटन, ई. (2014). द एनार्किस्ट कॉमन्स. इफेमेरा, 14(4), 879-900.

ले बिलॉन, पी. (2012). वार्स ऑफ़ प्लंडर: कॉन्फ़्लिक्ट्स, प्रोफ़िट्स एंड द पॉलिटिक्स ऑफ़ रोसोर्सेज. न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस.

लेविस, एन.(2009). प्रोग्रेसिव स्पेसेज ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म? एशिया पेसेफ़िक व्यूपॉइंट, 50(2), 113-119.

मकेलबर्ग, एम. (2011). डूइंग इस बिलीविंग: प्रीफ़िगरेशन एज स्ट्रेट्रेजिक प्रेक्टिस इन द अल्टरग्लोबलाइजेशन मूवमेंट स्टडीज, 10(1), 1-20.

ओंग, ए.(2007). नियोलिबरेलिज्मएज ए मोबाइल टेक्नोलॉजी. ट्रांजेक्शन्स ऑफ़ द इंस्टीट्यूट ऑफ़ ब्रिटिश ज्योग्राफ़र्स, 32(1), 3-8. 10

पेक, जे. (2004). ज्योग्राफ़ी एंड पब्लिक पॉलिसी: कंसट्रक्संश ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म. प्रोग्रेस इन ह्यूमन ज्योग्राफ़ी, 28(3), 392-405.

पेक, जे.(2010). जोम्बी नियोलिबरेलिज्म एंड द एम्बीडेक्सट्रस स्टेट. थियोट्रिकल क्रिमिनोलॉजी, 14(1), 104-110.

पर्सेल, एम. (2016). अवर न्यू आर्म्स. इन स्प्रिंगर, एस., बिर्च, के. एंड मैक्लेवी, जे. (eds.). द हैंडबुक ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म. न्यूयॉर्क, रूटलेज, पृ. 613-622.

रोलो, टी. (2016). डेमोक्रेसी, एजेंसी एंड रेडिकल चिल्ड्रन्स ज्योग्राफ़ीज. इन व्हाइल, आर. जे., स्प्रिंगर, एस. एंड सूजा, एम. एल. डे. (eds.). द प्रेक्टिस ऑफ़ फ़्रीडम: एनार्किज्म, ज्योग्राफ़ी एंड द स्पिरिट ऑफ़ रिवोल्ट. लनमेन, एम.डी: रॉमेन एंड लिटीलफ़ील्ड.

शन्नोन, डी. एंड रूज, जे. (2009) रिफ़ूजिंग टू वेट: एनार्किज्म एंड इंटर्सेक्सनलिटी. एनार्किज्मो.http://anarkismo.net/article/14923

स्प्रिंगर, एस. (2008). द नॉन-इल्यूजरी एफ़ेक्ट्स ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म: लिंकिंग ज्योग्राफ़ीज ऑफ़ पॉवर्टी, इनेक्विलिटी एंड वाइलेंस. जियोफ़ॉर्म, 39(4), 1520-1525.

स्प्रिंगर, एस. (2009). रिन्यूड ऑथरिटेरियनिज्म इन साउथ-इस्ट एशिया: अंडरमाइनिंग डेमोक्रेसी थ्रॉ नियोलिबर्ल रोफ़ॉर्म, एशिया पेसेफ़िक व्यूपॉइंट, 50(3), 271-276.

स्प्रिंगर, एस. (2010). नियोलिबरेलिज्म एंड ज्योग्राफ़ी: एसपेंसन्स, वेरियगेसंस, फ़ॉर्मेसंस. ज्योग्राफ़ी कम्पास, 4(8), 1025-1038.

स्प्रिंगर, एस.. (2011). आर्टिकुलेड नियोलिबरेलिज्म: द स्पेसिफ़िसिटी ऑफ़ पेट्रोनेज, क्लेप्टोक्रेसी एंड वाइलेंस इन कंबोडियास नियोलिबरेलाइजेशन. इनवायरमेंट एंड प्लानिंग ए, 43(11), 2554-2570.

स्प्रिंगर, एस. (2012). Aएनार्किज्म! व्हाट ज्योग्राफ़ी स्टिल ऑट टू बी. एंटीपोड, 44(5), 1605-1624.

स्प्रिंगर, एस. (2013). नियोलिबरेलिज्म. द एशगेट रिसर्च कम्पेनियन टू क्रिटिकल ज्योग्राफ़िक्स, सं. के. डॉड्स, एम. कूस एंड जे. शार्प. बर्लिंगटन, वीटी: एशगेट, पृ.147-164.

स्प्रिंगर, एस. (2014). वार एंड पीसेज. स्पेस एंड पॉलिटी, 18(1), 85-96.

स्प्रिंगर, एस. (2015). वाइलेंट नियोलिबरेलिज्म: डिवेलपमेंट, डिस्कोर्स एंड डिस्पजेशन इन कंबोडिया. न्यूयॉर्क: पालग्रेव मैकमिलन.

स्प्रिंगर, एस. (2016 a) द एनार्किस्ट रूट्स ऑफ़ ज्योग्राफ़ी: टुवर्ड स्पाटियल इमेंसिपेशन, मिनेपॉलिस, एम एन: यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिनेसोटा प्रेस.

स्प्रिंगर, एस. (2016 b) द डिस्कोर्स ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म: एन एनाटॉमी ऑफ़ ए पॉवरफ़ुल आइडिया. लनमेन, एम.डी. रॉमेन एंड लिटिलफ़ील्ड.

स्प्रिंगर, एस., बिर्च, के. एंड मैकले, जे. (2016) एन इंट्रोडक्शन टू नियोलिबरेलिज्म. इं.

स्प्रिंगर, एस., बिर्च, के. एंड मैकले, जे. (eds.). द हैंडबुक ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म. न्यूयॉर्क, रूटलेज, पृ. 1-14. 11

व्हाइट, आर.जे एंड विलियम्स, सी.सी. (2012). द पर्वेसिव नेचर ऑफ़ हेट्रोडॉक्स इकोनॉमिक स्पेसेज एट ए टाइम ऑफ़ नियोलिबरल क्राइसिस: टूवर्ड्स ए 'पोस्टनियोलिबरल' एनार्किस्ट फ़्यूचर, एंटीपोड, 44(5), 1625-1644.

विल्सन, जे.(2016). नियोलिबरल गोथिक. इं.स्प्रिंगर, एस.,, बिर्च, के. एंड मैकले, जे. (eds.). द हैंडबुक ऑफ़ नियोलिबरेलिज्म. न्यूयॉर्क, रूटलेज, पृ.592-602.

जिम्बार्डो, पी. (2007). द ल्यूसिफ़र इफ़ेक्ट: अंडरस्टैंडिंग हाउ गुड पीपल टर्न एविल. न्यूयॉर्क: रेंडम हाउस.